बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 17 ● नई दिल्ली ● वीरवार 23 अक्तूबर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागारिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

रुपये में उतार-चढ़ाव रोकने के लिए आरबीआई ने अगस्त में बेचे 7.7 अरब डॉलर, बुलेटिन में दावा

नई दिल्ली । भारतीय रिजर्व बैंक ने विनिमय दर में उतार-चढ़ाव को रोकने और अमेरिकी मुद्रा मुकाबले रुपये के मूल्य में गिरावट को थामने के लिए अगस्त में 7.7 अरब डॉलर की बिकवाली की। आरबीआई के ताजा बुलेटिन में प्रकाशित डॉलर की बिक्री/खरीद के आंकड़ों के अनुसार, अगस्त में केंद्रीय बैंक की डॉलर की शुद्ध बिक्री 7.69 अरब डॉलर रही। यह पिछले महीने की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक है। आंकड़ों से यह भी पता चला कि रिजर्व बैंक ने जुलाई और अगस्त में अमेरिकी डॉलर नहीं खरीदे। रिजर्व बैंक का घोषित रुख यह है कि वह रुपया-डॉलर विनिमय दर के लिए किसी स्तर या बैंड को लक्ष्य नहीं करता है.

अमेजन नदी के किनारे होगा तेल उत्खनन, यूएन जलवायु शिखर सम्मेलन से पहले ब्राजील सरकार का बड़ा

बिजनेस डेस्क । ब्राजील की सरकारी तेल कंपनी पेट्रोब्रास को अमेजन नदी के मुहाने के पास अन्वेषण के मकसद से ड्रिलिंग की अनुमति मिल गई है। यह फैसला ऐसे समय लिया गया है जब कुछ ही हफ्तों में संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन आयोजित होने वाला है। इसमें जीवाश्म ईंधनों के उपयोग में कटौती पर चर्चा होगी। सोमवार को दी गई मंजूरी के मुताबिक ड्रिलिंग एफजेडए-एम-059 ब्लॉक में की जाएगी। यह जगह अमापा राज्य के तट से 175 किलोमीटर दूर स्थित है। पेट्रोब्रास के अनुसार, यह ड्रिलिंग कार्य पांच महीने तक चलेगा और इसमें तेल उत्पादन नहीं होगा। खनन की यह अनुमति ब्राजीलियाई पर्यावरण संस्थान ने दी है, जो पर्यावरण मंत्रालय के अधीन काम करता है। ऊर्जा मंत्री अलेक्जांद्रे सिल्वेरा ने इस निर्णय का स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि सरकार पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ अंतरराष्ट्रीय मानकों पर ड्रिलिंग सुनिश्चित करेगी। गौरतलब है कि विगत जून माह में ब्राजील ने अमेजन क्षेत्र के पास कई भूमि और अपतटीय तेल ब्लॉकों की नीलामी की थी। तेल ब्लॉक को शेवरॉन, एक्सॉनमोबिल, पेट्रोब्रास और चाइना नेशनल पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन को आवंटित किए गए थे। पर्यावरण कार्यकर्ताओं और आदिवासी समूहों ने इस परियोजना का विरोध किया है। उनका कहना है कि जिस क्षेत्र में खनन होना है वह तेज समुद्री धाराओं और अमेजन तट के पास होने के कारण पर्यावरणीय रूप से संवेदनशील है। एशियाई बाजारों में दिखी बढ़त एशियाई बाजारों में मंगलवार को तेजी रही, जापान का बेंचमार्क सूचकांक पहली बार प्रतीकात्मक रूप से महत्वपूर्ण 50,000 के स्तर के करीब पहुंच गया क्योंकि रूढ़िवादी सांसद साने ताकाइची को देश की पहली महिला प्रधानमंत्री चुना गया। टोक्यो में निक्केई 225 0.8 प्रतिशत बढ़कर 49,595.72 पर पहुंच गया क्योंकि जापानी सांसदों ने ताकाइची को चुना। उम्मीद है कि वह कम ब्याज दरों और अधिक सरकारी खर्च जैसी बाजार-अनुकूल नीतियों का समर्थन करेंगी, हालांकि उनकी गठबंधन सरकार को संसद में बमुश्किल ही बहुमत प्राप्त है। अमेरिकी डॉलर 150.75 येन से बढ़कर 151.05 जापानी येन हो गया। अगर ताकाइची बैंक ऑफ जापान द्वारा ब्याज दरों में वृद्धि को धीमा करने में सफल हो जाती है, तो डॉलर के मुकाबले येन अपेक्षाकृत कमजोर रहने की संभावना है। इससे बैंक के मुद्रास्फीति पर अंकुश लगाने के प्रयासों में बाधा आएगी, जो अभी लगभग 2 प्रतिशत की अपनी लक्षित दर से ऊपर है। हांगकांग का हैंग सेंग 1.7 प्रतिशत बढ़कर 26,286.47 पर और शंघाई कंपोजिट सूचकांक 1.2 प्रतिशत बढ़कर 3,910.13 पर पहुंच गया। इस महीने के अंत में एक क्षेत्रीय शिखर सम्मेलन के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की मुलाकात की उम्मीदों ने दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापार तनाव कम होने की उम्मीदें बढ़ा दी हैं। अमेरिका की ओर से ट्रांस-शिपमेंट माल पर लगाए गए 40 प्रतिशत टैरिफ से भारत और आसियान क्षेत्र की कंपनियों को गंभीर अनुपालन संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। मूडीज रेटिंग्स ने अपनी हालिया रिपोर्ट में चेतावनी दी है कि यह नीति मशीनरी, विद्युत उपकरण और सेमीकंडक्टर जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के लिए जोखिम बढ़ा सकती है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 31 जुलाई को ट्रांस-शिपमेंट श्रेणी में आने वाले माल पर 40 शुल्क लगाने की घोषणा की थी। यह टैरिफ पारंपरिक द्विपक्षीय शुल्कों से अलग है और विशेष रूप से उन उत्पादों को लक्षित करता है जो चीन से कम टैरिफ वाले तीसरे देशों के माध्यम से अमेरिका भेजे जाते हैं।

दिवाली के बाद 16 शहरों में हवा जहरीली, दिल्ली में 4 साल में सर्वाधिक

दिल्ली दिवाली के अगले दिन देश के कम से कम 16 शहरों की औसत हवा बेहद खराब से लेकर गंभीर श्रेणी में दर्ज की गई। इनमें राजधानी दिल्ली के अलावा 10 शहर हरियाणा, तीन यूपी, एक राजस्थान और एक गुजरात के हैं। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के 24 घंटे के औसत डटा के अनुसार देश में सबसे खराब स्थिति हरियाणा के जींद में रही जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 421 दर्ज किया गया, जो गंभीर श्रेणी में आता है। इसके अलावा हरियाणा के ही धारूहेड़ा में एक्यूआई 412 दर्ज किया गया। दिल्ली-एनसीआर के शहरों में पटाखों को लेकर सुप्रीम कोर्ट के आदेश की जमकर धज्जियां उड़ीं। सुप्रीम कोर्ट ने रात आठ बजे से 10 बजे तक ग्रीन पटाखों की अनुमति दी थी, लेकिन लोगों ने आधी रात के बाद तक भी जमकर पटाखे फोड़े, जिसके चलते पीएम 2.5 यानी सूक्ष्म कणों ने हवा को दमघोंटू बना दिया। दिल्ली में

दिवाली पर चार साल में सबसे खराब वायु गुणवत्ता दर्ज की गई, रात में प्रदूषण का स्तर तेजी से बढ़ा और पीएम 2.5 का घनत्व 675 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर पर पहुंच गया, जो 2021 के बाद से सबसे ज्यादा है। चार साल से तुलना करें, तो 2024 में दिवाली की रात दिल्ली में पीएम 2.5 का स्तर 609, 2023 में 570, 2022 में 534, जबकि 2021 में 728 था। दिल्ली की हवा मंगलवार को बेहद खराब श्रेणी में पहुंच गई और वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 351 दर्ज किया गया। एनसीआर में गुरुग्राम की हवा सबसे अधिक प्रदूषित रही। यहां एक्यूआई 370 दर्ज किया, गाजियाबाद में 324, नोएडा में 320 और ग्रेटर नोएडा में 282 सूचकांक दर्ज किया गया। फरीदाबाद में एक्यूआई एनसीआर के अन्य शहरों के मुकाबले सबसे कम 268 दर्ज किया गया। स्विटजरलैंड की एजेंसी आईक्यूएयर के अनुसार दिल्ली की वायु गुणवत्ता मंगलवार को दुनिया में सबसे खराब रही। आईक्यूएयर के अनुसार नई दिल्ली का एक्यूआई 442 रहा। हवा में पीएम 2.5 कणों की मौजूदगी विश्व स्वास्थ्य संगठन के तय मानक से 59 गुना अधिक दर्ज की गई। पीएम 2.5 का अर्थ 2.5 माइक्रोन या उससे कम व्यास वाले कण हैं जो फेफड़ों तक पहुंच कर घातक बीमारियों और हृदय संबंधी समस्याओं की वजह बन सकते हैं। दिल्ली-एनसीआर को आने वाले दिनों में भी प्रदूषण से राहत मिलने की उम्मीद नहीं है, क्योंकि पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय का अनुमान है कि वायु गुणवत्ता खराब से लेकर बेहद खराब के बीच ही बनी रहेगी। सुप्रीम कोर्ट ने पिछले सप्ताह पटाखों पर प्रतिबंध में ढील देते हुए दिवाली के अवसर पर हरित पटाखे चलाने की अनुमति दी थी। दिल्ली और उसके पड़ोसी जिले हर सर्दियों में गंभीर वायु प्रदूषण का शिकार बनते हैं। इनमें वाहनों का धुआं, खेतों में जलाई जाने वाली पराली और धूल की बड़ी हिस्सेदारी होती है। इसके कारण दो करोड़ से अधिक लोग प्रभावित होते हैं। सबसे खराब वायु गुणवत्ता वाले शहरों में उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद (324), नोएडा (320) और हापुड़ (314) शामिल हैं। हरियाणा के नारनौल में एक्यूआई 390, रोहतक में 376, गुरुग्राम में 370 और बहादुरगढ़ में 368 दर्ज किया गया। राजस्थान के भिवाड़ी में 364 और गुजरात के नंदेसरी में 303 एक्यूआई रहा

संबंध शब्द मात्र से साबित नहीं कर सकते

दिल्ली । दिल्ली हाईकोर्ट ने कहा कि बिना ठोस साक्ष्य के केवल शारीरिक संबंध शब्द का इस्तेमाल करना दुष्कर्म या गंभीर यौन उत्पीड़न का अपराध साबित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। अदालत ने कहा कि किसी आरोपी को सजा देने से पहले यह साबित होना जरूरी है कि अपराध के सभी आवश्यक तत्व पूरे हुए हों। यह टिप्पणी जस्टिस मनोज कुमार ओहरी ने अपील पर सुनवाई के दौरान की, जिसमें आरोपी ने दुष्कर्म व पॉक्सो कानून के तहत सजा को चुनौती दी थी। आरोपी को ट्रायल कोर्ट ने 10 साल की सजा सुनाई थी। जस्टिस ओहरी ने 17 अक्तूबर को दिए फैसले में कहा, सिर्फ शारीरिक संबंध शब्द का प्रयोग, बिना किसी ठोस साक्ष्य के यह साबित करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि अभियोजन पक्ष ने आरोपों को संदेह से परे साबित किया है। कोर्ट ने कहा, भारतीय दंड संहिता या पॉक्सो अधिनियम में शारीरिक संबंध शब्द का कोई स्पष्ट अर्थ या परिभाषा नहीं दी गई है। ऐसे में जब तक यह स्पष्ट न हो कि इस शब्द से अभिप्राय क्या है, तब तक अपराध सिद्ध नहीं माना जा सकता। ऐसे में आरोपी की दोषसिद्धि बनाए रखना न्यायसंगत नहीं होगा। कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट का फैसला रद्द करते हुए आरोपी को बरी कर दिया। हाईकोर्ट ने कहा, कोर्ट का कर्तव्य है कि निर्णय साक्ष्यों के आधार पर ही करे, अनुमानों पर नहीं। 2023 में दर्ज मामले में 16 वर्षीय लड़की का आरोप था कि 2014 में चचेरे भाई ने शादी का झांसा देकर एक साल तक संबंध बनाए, पर कोर्ट में पाया गया कि मामला मौखिक गवाही पर आधारित था और फोरेंसिक या चिकित्सीय सबूत मौजूद नहीं था। किसी स्वतंत्र गवाह का बयान भी नहीं था। कोर्ट ने कहा कि न तो अभियोजन पक्ष और न ही ट्रायल कोर्ट ने यह समझने की कोशिश की कि पीड़िता शारीरिक संबंध से क्या मतलब बता रही थी। पीड़िता से स्पष्ट सवाल नहीं पूछा, जिससे पता चल सके कि क्या अपराध के जरूरी तत्व पूरे हुए थे या नहीं।

दिल्ली में प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए विंटर एक्शन प्लान लागू

नई दिल्ली । राजधानी में वायु प्रदूषण बढ़ने की स्थिति में उस पर नियंत्रण के लिए एमसीडी ने अपना विंटर एक्शन प्लान लागू कर दिया है। इस प्लान के तहत उसने अपने सभी 12 जोनों में प्रदूषण के स्रोतों की पहचान, निगरानी और दंडात्मक कार्रवाई को तेज कर दिया है।

उसने 379 निगरानी दल गठित किए गए हैं, जिनमें 1172 अधिकारी शामिल हैं। इन टीमों ने खुले में कचरा जलाने, निर्माण एवं विध्वंस अपशिष्ट डंपिंग और सड़कों पर धूल नियंत्रण पर कार्रवाई शुरू कर दी है। एमसीडी के विंटर एक्शन प्लान में सबसे अहम पहल 24म7 निगरानी व्यवस्था की है। दिन और रात दो शिफ्टों में अलग-अलग दल काम कर रहे हैं। निर्माण एवं विध्वंस अपशिष्ट की निगरानी के लिए 158 दल और 450 कर्मचारी तैनात हैं, जिनमें 77 दल (231 कर्मचारी) दिन में और 81 दल (219 कर्मचारी) रात में सक्रिय हैं। इनका काम निर्माण स्थलों पर धूल रोकने के उपायों की जांच और नियम तोड़ने वालों के खिलाफ चालान जारी करना है। खुले में कचरा और जैव अपशिष्ट जलाने की घटनाओं की रोकथाम के लिए 221 निगरानी दलों की तैनाती की गई है, जिनमें 722 कर्मचारी शामिल हैं। दिन में 97 दल और रात में 124 दल सक्रिय रहते हैं, जो संवेदनशील इलाकों में नियमित गश्त करते हैं। एमसीडी अधिकारियों के अनुसार, सभी निगरानी दलों को केंद्रीय गुणवत्ता प्रबंधन आयोग के निर्देशों के अनुपालन के लिए संवेदनशील बनाया गया है। इसके अलावा ग्रेप के तहत रोजाना की कार्रवाई रिपोर्ट ग्रीन वार रूम को भेजी जा रही है, जिसे बाद में आयोग के पोर्टल पर अपलोड किया जाता है। एमसीडी ने कहा कि विंटर एक्शन प्लान केवल निगरानी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सड़क धूल नियंत्रण, यांत्रिक सफाई, सीएंडडी अपशिष्ट का समयबद्ध निस्तारण और अवैध जलाने पर दंडात्मक कार्रवाई जैसी कई पहल शामिल हैं। एमसीडी के अधिकारियों ने यह भी बताया कि सर्दी बढ़ने के साथ रेड अलर्ट चरण में विशेष गश्ती अभियान और स्थानीय वार्ड स्तर पर निरीक्षण ड्राइव को और तेज किया जाएगा। दूसरी ओर एमसीडी ने नागरिकों से अपील करनी शुरू की है कि वे प्रदूषण फैलाने वाली किसी भी गतिविधि की सूचना तुरंत उसके कंट्रोल रूम या मोबाइल एप्प के माध्यम से दें, ताकि सर्दियों में वायु प्रदूषण को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सके।

प्रवासी भारतीय प्रसिद्ध फोटोग्राफर पॉल अवस्थी का विभूति चतुर्वेदी के निवास पर भव्य स्वागत

मॉन्ट्रियल (कनाडा)। दीपावली के शुभ अवसर पर कनाडा में रह रहे प्रवासी भारतीय एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वरिष्ठ फोटोग्राफर श्री पॉल अवस्थी अपनी धर्मपत्नी के साथ राष्ट्र टाइम्स परिवार के स्नेहपूर्ण आमंत्रण पर विजय शंकर चतुर्वेदी की सुपुत्री सुश्री विभूति चतुर्वेदी के निवास पर पधारे। उनके आगमन से दीपावली की जगमग रोशनी और भारतीय परंपरा की सौंधी खुशबू ने वातावरण को उल्लास और अपनत्व से भर दिया। दीपों की चमक, भारतीय संगीत की मधुर लहरें और आत्मीय संवादों ने इस शाम को अविस्मरणीय बना दिया। संपादक विजय शंकर चतुर्वेदी ने किया आत्मीय अभिनंदन – इस अवसर पर राष्ट्र टाइम्स के प्रधान संपादक विजय शंकर चतुर्वेदी ने पॉल अवस्थी दंपति का शॉल ओढ़ाकर, स्मृति चिन्ह और राष्ट्र टाइम्स की विशेष स्मारिका भेंट कर हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने बताया कि यह स्मारिका राष्ट्र टाइम्स के 45 वर्षों की सतत प्रकाशन यात्रा और उनके 52 वर्षों के पत्रकारित जीवन की अमूल्य उपलब्धियों का प्रतीक है।

श्री चतुर्वेदी ने कहा –पॉल अवस्थी जैसे व्यक्तित्व, जिन्होंने 1960 के दशक से कैमरे के माध्यम से समाज, संस्कृति और मानव जीवन की भावनाओं को सजीव रूप में दर्ज किया, वास्तव में भारतीय प्रवासी समाज के गौरव हैं।– फोटोग्राफी के छह दशक अनुभव, समर्पण और सृजन की कहानी – अपने अनुभव साझा करते हुए श्री पॉल अवस्थी ने बताया कि उन्होंने 1960 में नई दिल्ली के सागर स्टूडियो में अपने फोटोग्राफी करियर की शुरुआत की थी। वर्षों की मेहनत और लगन के बाद उन्होंने एनसीईआरटी (छम्त्ज्ञ) में कार्य करते हुए तकनीकी दक्षता अर्जित की और 1966 में अपने परिवार के साथ 'अवस्थी फोटो स्टूडियो' की स्थापना की। उन्होंने अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों – स्व. उपराष्ट्रपति वी.वी. गिरी, शिक्षा मंत्री बी.के.आर.वी. राव, और फिल्म जगत की सुप्रसिद्ध हस्तियों जीतेन्द्र, धर्मेन्द्र, राजश्री, माला सिन्हा और मनोज कुमार – की फोटोग्राफी की। 1972 में वे कनाडा आए और आधुनिक फोटोग्राफी

तकनीकों के साथ अपनी कला को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। वर्तमान में वे कनाडा में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक आयोजनों को राष्ट्र टाइम्स के लिए कवर कर रहे हैं। राष्ट्र टाइम्स को बताया भारतीय पत्रकारिता का स्वर्णिम प्रतीक –श्री अवस्थी ने कहा कि –राष्ट्र टाइम्स का 45 वर्षों तक निरंतर प्रकाशन पत्रकारिता का एक गौरवशाली अध्याय है। विजय शंकर चतुर्वेदी का समर्पण और ईमानदार दृष्टिकोण इस युग को वास्तव में स्वर्णिम युग बनाते हैं।–उन्होंने प्रवासी भारतीय समुदाय में राष्ट्र टाइम्स की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि –यह केवल एक समाचार पत्र नहीं, बल्कि भारत और कनाडा के बीच संस्कृति, संवेदना और संवाद का जीवंत पुल है।–

भारतीय स्वाद और आतिथ्य का अद्भुत संगम – दीपावली मिलन के इस अवसर पर श्रीमती सुनीता चतुर्वेदी और सुश्री विभूति चतुर्वेदी ने अवस्थी दंपति का हार्दिक स्वागत किया। भारतीय पारंपरिक व्यंजनों की मनमोहक सुगंध वातावरण में रच-बस गई – मसाला चाय, गोलगप्पे, कटलेट, समोसे, रसमलाई, ने स्वाद और संस्कृति दोनों का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया। मेहमानों ने इन स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लेते हुए भारतीय संगीत, हँसी और आत्मीय संवादों के बीच दीपावली का उत्सव मनाया। पूरे कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति, प्रेम, अपनापन और प्रवासी भावना की झलक साफ दिखाई दी।

भारतीयता और प्रवासी एकता का जीवंत उदाहरण– यह दीपावली मिलन केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि भारतीयता, परंपरा और प्रवासी एकता का सुंदर प्रतीक बन गया। श्री पॉल अवस्थी और श्रीमती अरुणा अवस्थी ने कनाडा में बसे भारतीय समुदाय के सौहार्द और अपनत्व की सराहना की तथा भविष्य में भी भारतीय सांस्कृतिक आयोजनों को कैमरे में सहेजते रहने का संकल्प दोहराया।

विकसित देश बनने की बड़ी बाधा, सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार

राजीव सचान

सरकारी तंत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार समाप्त होने का तो सवाल ही नहीं उठता, लेकिन अपने देश में वह नियंत्रित होने का भी नाम नहीं ले रहा है। इसके हैरान-परेशान करने वाले उदाहरण सामने आते ही रहते हैं। ताजा उदाहरण पंजाब में रोपड़ रेंज के डीआइजी हरचरण सिंह भुल्लर की गिरफ्तारी के रूप में है। भुल्लर को एक स्क्रैप व्यापारी से आठ लाख रुपये की रिश्वत मांगने पर गिरफ्तार किया गया। उन्होंने रिश्वत लेने के लिए जिस दलाल को रख रखा था, उसकी भी गिरफ्तारी हुई। खबरों के अनुसार डीआइजी साहब स्क्रैप व्यापारी से आठ लाख रुपये महीने की रिश्वत मांग रहे थे। सीबीआइ ने उन्हें गिरफ्तार करने के बाद मोहाली, अंबाला आदि शहरों में उनके कई ठिकानों पर छापेमारी की तो साढ़े सात करोड़ रुपये नकद और ढाई किलो सोना मिला। उनके पास से 50 से ज्यादा संपत्तियों के दस्तावेज मिले और मर्सिडीज, आडी समेत कई महंगी गाड़ियां भी। कहना कठिन है कि उन्होंने भ्रष्टाचार के जरिये कितनी संपत्ति जमा की होगी, क्योंकि अभी इसका विवरण नहीं आया है कि उनके बैंक खातों में कितना पैसा है और लाकरों में क्या रखा है? जो आसानी से कहा जा सकता है, वह यह कि वे दोनों हाथों से संपदा बटोर रहे थे और उन्हें कोई रोकने-टोकने वाला नहीं था। वे संपन्न घर के थे। उनके पिता पंजाब के डीजीपी रह चुके हैं। क्या यह कहा जा सकता है कि भुल्लर अकेले ऐसे अफसर होंगे, जो अपने अधिकारों का बेजा इस्तेमाल कर भ्रष्टाचार में लिप्त थे? ऐसा हर्गिज नहीं कहा जा सकता। वैसे भी वे पहले ऐसे अधिकारी नहीं, जो भ्रष्टाचार में लिप्त पाए गए हों। हर माह-दो माह में ऐसे भ्रष्ट अधिकारी सामने आते ही रहते हैं, जिनके पास से काली कमाई के करोड़ों-अरबों रुपये मिलते हैं। भुल्लर की गिरफ्तारी के एक दिन बाद ही गुवाहाटी में नेशनल हाईवे एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कार्पोरेशन लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक और रीजनल अफसर एम. रीतेन कुमार सिंह को सीबीआइ ने दस लाख रुपये की रिश्वत लेते पकड़ा। उनके पास से 2.62 करोड़ रुपये नकद मिले। इसके अलावा यह भी पता चला कि उनके दिल्ली-एनसीआर में 9 लक्जरी फ्लैट, एक प्रीमियम आफिस स्पेस और तीन रेजिडेंशियल प्लाट भी हैं। इसके साथ ही एक फ्लैट बेंगलुरु में, चार फ्लैट, दो प्लाट गुवाहाटी में, दो प्लाट और कृषि भूमि इंफाल में भी मिली। उनके यहां नौ महंगी गाड़ियां भी पाई गईं। सीबीआइ को उनकी कई संपत्तियां बेनामी होने का संदेह है। वे नेशनल हाईवे-37 के काम की समयसीमा बढ़ाने और कंप्लीशन सर्टिफिकेट जारी करने के बदले दस लाख रुपये की रिश्वत ले रहे थे। अब आप यह और अच्छे से समझ सकते हैं कि अपने देश में दोयम दर्जे का निर्माण क्यों होता है और क्यों सड़कें, पुल आदि बनने के कुछ समय बाद ही क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। ऐसा इसीलिए होता है, क्योंकि जहां किसी तरह का निर्माण है, वहां भ्रष्टाचार है। इसी तरह जहां भी किसी तरह की सरकारी अनुमति, अनुमोदन, निरीक्षण-परीक्षण, प्रमाणन, नवीनीकरण आदि है, वहां भी लेन-देन है। कहीं-कहीं तो इसके रेट तय हैं। अपने देश में जायज काम भी नाजायज तरीके यानी पैसे लेकर होते हैं। इससे सरकारी कामों की गुणवत्ता गिरती है और नियम-कानूनों की अनदेखी होती है। इसके नतीजे में अव्यवस्था फैलती है, असंतोष बढ़ता है और देश की प्रगति थमती है। इसी कारण भारत के विकसित बनने का सपना पूरा होना कठिन है। आखिर जब देश को विकसित बनाने में सहायक बनने वाला तंत्र ही उसमें बाधक बनेगा तो वह लक्ष्य कैसे पूरा होगा? भ्रष्ट सरकारी तंत्र किस तरह देश को क्षति पहुंचा रहा और उसकी बदनामी करा रहा, इसका एक उदाहरण बीते दिनों विषाक्त कफ सीरप से 25 से ज्यादा बच्चों की मौतों के रूप में सामने आया। प्रारंभिक जांच-पड़ताल में पता चला कि दवा निर्माण से लेकर परीक्षण की प्रक्रिया अनदेखी-उपेक्षा का शिकार थी। यह समझना किसी के लिए भी कठिन नहीं होना चाहिए कि इस अनदेखी-उपेक्षा के मूल में भ्रष्टाचार ही रहा होगा।

जब विषाक्त कफ सीरप का मामला सतह पर था, तब देश भर से नकली-मिलावटी खोया, मिठाई आदि के सैंपल बड़े पैमाने पर पकड़े जाने की खबरें आ रही थीं। यदि ऐसी खबरें बड़े त्योहारों के समय ही आती हैं तो इसका यह मतलब नहीं कि शेष दिनों नकली-मिलावटी खाद्य सामग्री नहीं बनती-बिकती। वास्तव में यह काम हर समय होता है। सरकारी तंत्र में भ्रष्टाचार इसलिए है, क्योंकि हमारे औसत नेता भ्रष्ट हैं। इनमें पार्षद से लेकर मंत्री तक शामिल हैं। सरकारें यह दावा करती हैं कि वे भ्रष्टाचार को लेकर जीरो टालरेंस की नीति पर चल रही हैं। यदि ऐसी कोई नीति सचमुच होती तो क्या हरचरण सिंह भुल्लर और रीतेन कुमार सिंह जैसे अधिकारी अकूत संपदा के स्वामी बन सकते थे? उक्त दोनों अधिकारियों को जेल भेज दिया गया और वे निलंबित भी कर दिए गए। इस बारे में सुनिश्चित नहीं हुआ जा सकता कि क्या ये दोनों कठोर दंड के भागीदार बनेंगे? भुल्लर ने जेल ले जाते समय कहा कि उन्हें भरोसा है कि कोर्ट इंसाफ करेगा। पता नहीं रीतेन कुमार सिंह ने क्या कहा, लेकिन वे भी अदालतों पर भरोसा जता रहे हों तो हैरानी नहीं। इसलिए नहीं कि देश ने देखा कि दिल्ली हाई कोर्ट के जिस जज के यहां करोड़ों के अधजले नोट मिले, वे तकनीकी रूप से अभी भी जज बने हुए हैं।

सम्पादकीय...

चाईना इंडिया को क्यों लगाने लगा मस्का?

बेंगलुरु में आयोजित इंडिया-चाइना फ्रेंडशिप एसोसिएशन के एक कार्यक्रम में चीन के मुंबई स्थित महावाणिज्यदूत किन जिए ने कहा कि भारत और चीन मिलकर उन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं जिन्हें पश्चिमी देश नहीं कर पा रहे हैं। उन्होंने भारत-चीन संबंधों को उज्ज्वल भविष्य वाला बताते हुए कहा कि दोनों देशों के पास विशाल जनसंख्या, बड़ा बाजार और महान बुद्धिमत्ता है। हम आपको बता दें कि यह कार्यक्रम भारत-चीन के राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित हुआ। जिए ने बेंगलुरु की तकनीकी प्रगति, जलवायु और नगरीय विकास की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह चीनी निवेश के लिए आकर्षक केंद्र बन सकता है। उन्होंने बताया कि चीन की एक कंपनी पिछले दस वर्षों से कर्नाटक में कार्यरत है और 3,000 से अधिक लोगों को रोजगार दे रही है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में लगभग 1,000 चीनी नागरिक रह रहे हैं और यह संख्या आगे बढ़ेगी। हम आपको बता दें कि भारत ने पाँच साल बाद चीनी पर्यटकों के लिए वीज़ा जारी करना शुरू किया है और सीधी उड़ानों के पुनरारंभ से पर्यटन व व्यापार में वृद्धि की उम्मीद है। जिए ने बताया कि मुंबई स्थित दूतावास ने 2025 में अब तक 80,000 वीज़ा जारी किए हैं, जो वर्ष के अंत तक 3,00,000 तक पहुँच सकते हैं। कार्यक्रम में चीन की जापान पर 1945 की विजय पर फोटो प्रदर्शनी भी लगाई गई। देखा जाये तो बेंगलुरु में चीन के महावाणिज्यदूत की मीठी बातों में मिठास कम और मंशा ज्यादा थी। भारत और चीन मिलकर पश्चिम से बेहतर काम कर सकते हैं, सुनने में आकर्षक लगता है, पर यह वाक्य कूटनीति की भाषा में एक सॉफ्ट ट्रैप है। यह वही चीन है जिसने गलवान की रात भारत के जवानों पर हमला किया था, और अब उसी के प्रतिनिधि दोस्ती की बातें कर रहे हैं। सवाल यह नहीं कि चीन क्या कह रहा है, बल्कि यह है कि क्यों कह रहा है? चीन की मुस्कान के पीछे की रणनीति देखें तो दरअसल वह अमेरिकी दबाव से राहत की खोज में है। आज चीन पश्चिमी गठबंधनों से घिरा हुआ है– और इंडो-पैसिफिक साझेदारी सब मिलकर बीजिंग को रणनीतिक घेराबंदी में रखे हुए हैं। भारत इनमें एक अहम भूमिका निभा रहा है। चीन जानता है कि अगर भारत थोड़ा भी तटस्थ हो जाए, तो पश्चिमी मोर्चे में दरार पड़ सकती है। इसलिए एशियाई एकता की बात दरअसल विभाजन की चाल है। इसके अलावा, कोविड के बाद चीन की अर्थव्यवस्था धीमी पड़ी है। विदेशी कंपनियाँ पलायन कर रही हैं, और युवाओं में बेरोजगारी रिकॉर्ड स्तर पर है। ऐसे में भारत का 1.4 अरब का बाजार बीजिंग को सोने की खान नज़र आ रहा है। बेंगलुरु की तारीफ़ दरअसल एक आर्थिक प्रस्तावना है– हमें अपने बाजार में वापस आने दो। इसके अलावा, गलवान, ताइवान, दक्षिण चीन सागर और हांगकांग– इन सबने चीन की छवि को कठोर और आक्रामक बना दिया है। अब वह सॉफ्ट डिप्लोमेसी के ज़रिए अपने चेहरे पर मुस्कान चढ़ा रहा है। फोटो प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम, दोस्ती की वर्षगांठ, यह सब रिश्तों की मरम्मत नहीं, छवि की मरम्मत है। साथ ही सीमा पर चीन की हरकतें अभी भी बंद नहीं हुई हैं। पैट्रोलिंग पॉइंट 15 और डेमचोक में गतिरोध जारी है। ऐसे में मैत्रीपूर्ण बयान केवल एक साइकोलॉजिकल ऑपरेशन हैं– ताकि भारत की जनता और मीडिया तनाव घटने का भ्रम पाल लें। अब सवाल उठता है कि क्या भारत को भरोसा करना चाहिए? देखा जाए तो कूटनीति का पहला नियम है– विश्वास करो, पर जाँचो। चीन पर भरोसा करने की भूल भारत पहले कर चुका है– 1954 में हिंदी-चीनी भाई-भाई का नारा और 1962 की धोखेबाज़ी इसका प्रमाण है। आज भी चीन संयुक्त राष्ट्र में आतंकवादियों के खिलाफ भारत के प्रस्तावों पर वीटो लगाता है, पाकिस्तान को समर्थन देता है और अरुणाचल प्रदेश को अपने नक्शे में दक्षिण तिब्बत बताता है। क्या यह मित्रता है? चीन की दोस्ती की परिभाषा हमेशा स्वार्थ से शुरू होकर स्वार्थ पर ही खत्म होती है। इसलिए भारत को इस बार भावनाओं से नहीं, हितों से निर्णय लेना होगा। सवाल उठता है कि भारत की रणनीति कैसी होनी चाहिए। जवाब यह है कि चीन से संवाद बना रहे, पर दूरी भी बनी रहे– यह एंगेज विद आउट इल्यूजन की नीति होनी चाहिए। टेक्नोलॉजी और इंफ्रास्ट्रक्चर क्षेत्रों में चीनी निवेश की कड़ी जाँच आवश्यक है। सीमा सुरक्षा, खुफिया सतर्कता और आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण को प्राथमिकता दी जाए। भरोसे की जगह सावधानी को आधार बनाया जाए। बहरहाल, चीन के महावाणिज्यदूत की बातें सुनने में सॉफ्ट लग सकती हैं, पर इतिहास बताता है कि चीन की कूटनीति कभी सॉफ्ट नहीं रही। गलवान की बर्फ़ अभी पिघली नहीं है, और बीजिंग फिर से दोस्ती का गुलदस्ता लेकर आया है। यह वही पुराना खेल है – पहले तनाव बढ़ाओ, फिर ÷मुस्कराहट÷ के साथ वार्ता का प्रस्ताव रखो, ताकि भारत असमंजस में रहे। भारत को इस बार ठंडी मुस्कान से नहीं, ठोस नीति से जवाब देना होगा। दोस्ती अच्छी है, लेकिन आँख मूँदकर चीन पर भरोसा करना घातक हो सकता है।

बेटियों की शिक्षा बदल रही भाग्य, देश में बदलते सांस्कृतिक सोच का एक महत्वपूर्ण क्षण

डॉ. शमिका रवि

गुजरात के द्वारका में एक कार्यक्रम में नरेन्द्र मोदी ने पूछा था कि कितनी महिलाओं ने पांचवीं कक्षा से आगे पढ़ाई की है। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अधिकांश बुजुर्ग महिलाओं ने हाथ उठाए। जब कारण पूछा गया तो बताया गया कि गायकवाड़ शासनकाल में अगर पिता अपनी बेटियों को नहीं पढ़ाते थे तो उन पर जुर्माना लगता था। उस समय नियमों का कड़ाई से पालन होता था। इसी वजह से कई महिलाएं तो पढ़ी-लिखी हैं, लेकिन उनकी बहुएं नहीं पढ़ पाईं। यह उदाहरण एक बड़ी सच्चाई बताता है कि केवल अच्छी नीयत ही काफी नहीं है। इसके साथ जवाबदेही, नेतृत्व और नीतियां भी जरूरी हैं। मोदी के नेतृत्व में भारत में यही बदलाव देखने को मिल रहा है। यह परिवर्तन नियम-कानूनों का नहीं, बल्कि सोच बदलने से जुड़ा है। यह परिवर्तन सिर्फ बेटियों के स्कूल जाने तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय समाज की नींव, स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और जनसांख्यिकी को बदलने का है, ताकि बेटियों को बदलाव का सबसे सशक्त वाहक बनाया जा सके और यह शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। गुजरात में मुख्यमंत्री रहने के दौरान ही मोदी ने समझा कि कन्या भ्रूण हत्या और लड़कियों की अशिक्षा जैसी समस्याएं सिर्फ कानूनों से हल नहीं हो सकतीं।

इसके लिए जनता का सोच बदलना जरूरी था। बेहतर सुविधाएं और प्रोत्साहन भी देने थे। वर्ष 2003 में शुरू हुई कन्या केलवणी मुहिम इसी बदलाव का जरिया बनी। इस अभियान ने बेटियों की शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाई और स्कूलों में लड़कियों के लिए अलग शौचालय जैसी बड़ी समस्या का हल निकाला। शौचालय के अभाव में कई बच्चियां किशोरावस्था में पढ़ाई छोड़ देती थीं। उक्त योजना के नतीजे बड़े सकारात्मक रहे। एक समय राष्ट्रीय औसत से कम रही गुजरात में महिला साक्षरता दर बढ़कर 70 प्रतिशत तक पहुंच गई। तब राष्ट्रीय औसत 64 प्रतिशत था। सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि लक्षित जिलों में लड़कियों के स्कूल छोड़ने की दर 90 प्रतिशत तक घट गई। मोदी ने इस नीति को सिर्फ सरकारी योजना नहीं रहने दिया, बल्कि जनांदोलन बना दिया। उन्होंने सार्वजनिक कार्यक्रमों में मिले उपहारों की नीलामी से लड़कियों की शिक्षा के लिए 19 करोड़ रुपये जुटाए और खुद 21 लाख रुपये का व्यक्तिगत योगदान भी दिया। इन प्रयासों से एक मजबूत संदेश गया कि बेटियों की शिक्षा केवल सरकार का काम नहीं, बल्कि पूरे समाज की जिम्मेदारी है। गुजरात की सफलता से प्रेरित होकर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान को 2015 में पूरे देश में शुरू किया गया। इसके दो उद्देश्य थे। पहला कन्या भ्रूण हत्या रोकना और दूसरा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना। शुरुआत में यह योजना 100 ऐसे जिलों में लागू हुई जहां लिंगानुपात की स्थिति सबसे खराब थी। बाद में यह पूरे देश में लागू की गई। इस योजना का लिंगानुपात सुधार पर सीधा असर पड़ा। वर्ष 2015 में प्रति 1,000 लड़कों पर लड़कियों की जो संख्या 919 थी, वह 2019-21 तक बढ़कर 929 हो गई। लिंगानुपात में सुधार तो इस तस्वीर का सिर्फ एक पहलू है। बड़ा बदलाव शिक्षा के जरिये आकार ले रहा है। बेटियों की शिक्षा कई सकारात्मक परिवर्तनों का माध्यम बनती है। पढ़ी-लिखी महिलाएं आम तौर पर देर से शादी करती हैं और कम बच्चे पैदा करती हैं। भारत की कुल प्रजनन दर (टीएफआर) अब 2.0 पर आ गई है, जो जनसंख्या को स्थिर रखने के स्तर से भी कम है। यह बदलाव सीधे तौर पर महिलाओं की बढ़ती शिक्षा और कामकाज में भागीदारी से जुड़ा है। शिक्षित महिलाएं गर्भावस्था और प्रसव के समय देखभाल को लेकर भी सावधानी बरतती हैं। बालिका शिशु मृत्यु दर में आ रही कमी इस रुझान की पुष्टि भी करती है। कामकाजी आबादी में महिलाओं की भागीदारी को लेकर जरूर कुछ चुनौतियां कायम हैं, लेकिन स्वास्थ्य, शिक्षा, विज्ञान-तकनीक और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में उनकी संख्या बढ़ रही है। ये वे क्षेत्र हैं, जहां पढ़ाई और कौशल का सबसे अधिक महत्व है। महिलाएं अब सैन्य अधिकारियों से लेकर टेक स्टार्टअप के सीईओ पद को सुशोभित कर रही हैं, जिनकी कल्पना कभी उनके करीबियों ने भी नहीं की होगी। अध्ययन बताते हैं कि शिक्षित माताओं के बच्चे पढ़ाई में बेहतर करते हैं और उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। यह सशक्तीकरण का एक सकारात्मक चक्र है, जो हर पीढ़ी को प्रभावित करता है।

मध्य प्रदेश के हालिया सर्वे के अनुसार 89.5 प्रतिशत लोग बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना के बारे में जानते हैं और 63.2 प्रतिशत का कहना है कि इस योजना ने उन्हें बेटियों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया।

समाज में जल्दी शादी टालने और बेटियों की उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने का समर्थन भी बढ़ा है। ये रुझान उस सोच में बदलाव को दर्शाते हैं, जहां कभी बेटियों को पूरी तरह से स्कूल जाने से रोक दिया जाता था। बेटियों की शिक्षा को प्रोत्साहन और इस मोर्चे पर अब तक की प्रगति हमारे समाज के विकास और पूरे देश में बदलते सांस्कृतिक सोच का एक महत्वपूर्ण क्षण है। यह बदलाव गहरा और स्थायी है, जिसे युवा महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सोच-समझकर बनाई गई प्रभावी नीतियां संभव बना रही हैं। इन पहलों का दीर्घकालिक असर और भी स्पष्ट होगा, क्योंकि यह सकारात्मक चक्र न केवल व्यक्तिगत जीवन, बल्कि पूरे समुदायों को बेहतर बनाता है। आज की पढ़ी-लिखी बेटियां सिर्फ छात्राएं नहीं हैं, वे कल की संभावित नेता, नीति-नियंता और बदलाव लाने वाली शक्ति हैं। शिक्षित बेटियों की भविष्य में पारिवारिक आय में योगदान करने और बच्चों की शिक्षा में निवेश करने की अधिक संभावना भी होती है। महिला शिक्षा में प्रत्यक्ष दिख रही प्रगति को लेकर हम भविष्य को लेकर आशान्वित हो सकते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में शुरू किए गए बदलाव आगे और गति पकड़ेंगे। इससे एक ऐसा समाज आकार लेगा, जहां हर लड़की को सीखने, बढ़ने और सफल होने का समान अवसर मिले। यह आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है, क्योंकि जब आप एक लड़की को शिक्षित करते हैं, तो आप पूरे समाज को आगे ले जाते हैं।

गोवर्धन असरानी की यादें: कभी परदे पर मुस्कुराने वाले इस सितारे ने कहा था- हम लोग जिंदगी को बारीकी से देखते हैं

लव गौर

पहली बार युवावस्था में जब मैं मुंबई गया था, तो एक महीने तक संगीतकार नौशाद को ढूंढता रहा था। मुझे उम्मीद थी कि अभिनय का काम दिलाने में वह मेरी मदद करेंगे। जब कुछ नहीं हुआ, तो मैं अपने गृह शहर जयपुर लौट आया, जहां मेरे माता-पिता ने पारिवारिक कालीन की दुकान पर काम करने के लिए कहा। लेकिन मैं तो अभिनय करना चाहता था, इसलिए मैंने एफटीआईआई में दाखिले के लिए आवेदन किया, और उसके पहले बैच में दाखिला ले लिया। हालांकि, 1966 में मैंने एफटीआईआई का कोर्स पूरा कर लिया, लेकिन वह अभिनेता बनने का पासपोर्ट नहीं था। काम मिलना मुश्किल था। उस समय किसी को यकीन नहीं था कि आप किसी संस्थान से अभिनय सीख सकते हैं, इसलिए मैंने संस्थान में प्रशिक्षक की नौकरी कर ली। लेकिन छह साल तक, हर शुक्रवार शाम, मैं अभिनय के मौके ढूंढने के लिए पुणे से मुंबई डेक्कन क्वीन में जाता था। तब टिकट की कीमत छह रुपये और छह आने थी। एक बार ऋषिकेश मुखर्जी गुलजार साहब के साथ संस्थान में आए। मैंने उन्हें मुझे काम देने के बारे में याद दिलाया। ऋषिदा ने कहा, 'देगा, काम देगा। पहले ये बताओ जया भादुड़ी कौन है?'

जया तब संस्थान में छात्रा थीं। जया ने सत्यजीत रे के साथ 'महानगर' (1963) में काम किया था। रे ने ही ऋषिदा से उनकी सिफारिश की थी। जया कैंटीन में चाय पी रही थीं। जब उन्हें बताया गया कि ऋषिदा उससे मिलने आए हैं, तो वह उनसे मिलने के लिए दौड़ पड़ी। जब ऋषिदा जाने वाले थे, तो मैंने उनसे पूछा, 'दादा मेरा?' उन्होंने जवाब दिया, 'तुम्हारा कुछ नहीं। जब मैं पत्र भेजूं, तो आना!' तीन महीने बाद एक चिट्ठी आई, लेकिन वह जया भादुड़ी के लिए थी। संस्थान में हलचल मच गई। लेकिन अंततः मुझे 'गुड्डी' में दो सीन का रोल मिल ही गया-एक ऐसे लड़के का, जो हीरो बनने आता है, लेकिन जूनियर आर्टिस्ट बन जाता है। ऋषिदा ने मुझे पुणे से मुंबई तक फर्स्ट क्लास में सफर करने के पैसे भी दिए। उसके बाद मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। ऋषिदा ने मुझे अपनी सभी फिल्मों में शामिल किया। उनके आखिरी दिनों में जब मैं उनसे मिलने अस्पताल गया, तो उन्होंने एक कागज पर 'असरानी मुखर्जी' लिखकर मुझे दिया। उनका मतलब था, 'तुम मेरे बेटे जैसे हो।' मेरे जीवन में सबसे बुरा दौर तब आया, जब मैंने 'चला मुरारी हीरो बनने' का निर्देशन करना चाहा। कोई भी मेरे साथ काम नहीं करना चाहता था। जिन दोस्तों के साथ मैं उठता-बैठता था, वे ही मेरी फिल्म नहीं करना चाहते थे। मैं एक सह-अभिनेता के रूप में ठीक था, निर्देशक के रूप में नहीं। वे मुझसे बचने के बहाने ढूंढते- 'स्क्रिप्ट अच्छी है, लेकिन इस पर काम करो।' दरअसल, हीरो एक तरह की उलझन से ग्रस्त होते हैं कि यह तो कॉमेडियन है, उससे हुक्म क्यों लेना? मैं स्क्रिप्ट लेकर गुलशन राय के पास भी गया था। उन्होंने मुझे एक ईमानदार सलाह दी, 'जिस दिन तुमने खुद को निर्देशक के रूप में घोषित किया, उसी दिन एक अभिनेता के रूप में तुम्हारी विश्वसनीयता खत्म हो गई।' आईएस जौहर, महमूद, जॉनी वॉकर, देवेन वर्मा का उदाहरण ले लो।' मैं समझ गया। इसलिए भले ही मैंने चला मुरारी... फिल्म बनाई, लेकिन मैं अभिनय में लौट आया। मुझे काम के बाद अपने साथियों के साथ घुलने-मिलने की निरर्थकता का एहसास हुआ। आप पूरा दिन एक-दूसरे के साथ रहते हैं। गपशप करते रहते हैं। यह समय और ऊर्जा की बर्बादी है। अगले दिन आपको उनसे फिर मिलना होगा। यह धारणा कि हास्य कलाकार दुखी लोग होते हैं, गलत है। हां, मैं जीवन का एक पर्यवेक्षक हूं और इसी बात ने मेरी कला को आगे बढ़ाने में मदद की है। बड़े निर्देशक आपको अच्छा भुगतान नहीं करते हैं, लेकिन वे आपकी प्रतिभा का खूबसूरती से दोहन करते हैं। ज्यादा बातचीत करने से आपकी रचनात्मक ऊर्जा खत्म हो जाती है। मुझे इसका एहसास देर से हुआ, लेकिन तब तक मैं कई साल बर्बाद कर चुका था। यह एक गलाकाट दुनिया है। लोग आपको नीचे गिराने के लिए तैयार बैठे हैं। इसलिए पेशेवर बने रहें।

फिर वही कहानी... दीवाली के बाद दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई शहरों में वायु प्रदूषण बढ़ा

जैसी आशंका थी, वैसा ही हुआ। दीवाली के अगले दिन दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई शहरों में वायु प्रदूषण में वृद्धि देखने को मिली। इनमें मुंबई और कोलकाता भी हैं। इसका अर्थ है कि वायु प्रदूषण केवल दिल्ली-एनसीआर की ही समस्या नहीं और ग्रीन पटाखे प्रदूषण रोकने में उतने सहायक नहीं, जितने माने जा रहे। यह सहज ही समझा जा सकता है कि दीवाली के अगले दिन दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण बढ़ने का कारण यह रहा कि ग्रीन पटाखों की आड़ में सामान्य पटाखे भी छोड़े गए। वे दीवाली के अगले दिन भी छोड़े गए। शायद इसलिए और भी, क्योंकि इस बार दीवाली किस दिन मने, इसे लेकर दो राय थी। ग्रीन पटाखों के बारे में यह धारणा है कि वे अपेक्षाकृत पर्यावरण के अनुकूल हैं, लेकिन क्या राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान अर्थात नीरी यह सुनिश्चित करने में समर्थ है कि ग्रीन पटाखे उसके मानकों के हिसाब से ही बनते हैं? प्रश्न यह भी है कि क्या सरकारी तंत्र इसकी निगरानी करने में सक्षम है कि ग्रीन पटाखों की आड़ में सामान्य पटाखे न बिकने पाएं? यह सही है कि वायु प्रदूषण का एकमात्र कारण पटाखे नहीं हैं, पर इसमें संदेह नहीं कि वे उसकी वृद्धि में सहायक बनते हैं। इससे लोग भी परिचित हैं, लेकिन दीवाली पर पटाखों के उपयोग को लेकर जैसे संयम का परिचय दिया जाना चाहिए, वह कम ही देखने को मिलता है। दीवाली पर पटाखों के उपयोग ने एक परंपरा का रूप ले लिया है, लेकिन समय की मांग है कि स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव को देखते हुए उनके सीमित इस्तेमाल को लेकर सचेत हुआ जाए। इसी के साथ इसकी भी व्यवस्था की जाए कि देश भर में केवल ग्रीन पटाखे ही बनें और बिकें। इस पर भी विचार किया जा सकता है कि क्यों न पटाखों का उपयोग ऐसे मौसम में किसी अन्य पर्व पर किया जाए, जब वे प्रदूषण फैलाने-बढ़ाने का माध्यम न बनें। निःसंदेह ऐसा तब होगा, जब राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र के अग्रणी लोग इसके लिए एकजुट होकर आगे आएंगे। ध्यान रहे स्वास्थ्य है तो सब कुछ है। चूंकि दीवाली बाद का वायु प्रदूषण सेहत के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है, इसलिए पराली दहन, धूल, वाहन उत्सर्जन जैसे कारणों के निवारण को लेकर भी सख्ती का परिचय दिया जाए। इसलिए और भी, क्योंकि अब वायु प्रदूषण केवल दिल्ली-एनसीआर की समस्या नहीं। यह देश के एक बड़े हिस्से की समस्या बन गया है और अब तक का अनुभव यही बताता है कि इस समस्या से पार पाने के प्रयास अपर्याप्त ही साबित होते हैं और वे भी तब, जब केंद्र और राज्य सरकारों समेत सुप्रीम कोर्ट भी उसकी रोकथाम के लिए सक्रिय होता है। इस सबके बाद भी सर्दियों में वायु प्रदूषण का सिर उठा लेना सामूहिक विफलता को ही बयान करता है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार भाटी ने वन्दना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, साउथ पैच्चतब्बा एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार भाटी, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2010/...)

दिवाली के दूसरे दिन भी दिल्ली-एनसीआर की हवा में जहर, आसमान में धुंध; जानें कहां कितना एक्यूआई

नई दिल्ली । दिवाली के दूसरे दिन आज दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण बरकरार है। हवा दमघोंटू बनी हुई है। हवा की गुणवत्ता बहुत खराब श्रेणी में है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने आंकड़े जारी किए हैं। दिल्ली का औसत एक्यूआई 345-380 के बीच है। वहीं दूसरी तरफ ग्रेप-2 पूरी तरह से लागू है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली के आरके पुरम क्षेत्र में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 380 दर्ज किया गया, जो बहुत खराब श्रेणी के अंतर्गत आता है। दिवाली के बाद, पटाखों के धुएं और अन्य मौसमी कारकों के कारण धुंध और स्मॉग की स्थिति और गंभीर हो गई है। यह स्थिति न केवल दिल्ली बल्कि पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में चिंता का विषय बनी हुई है। दिल्ली के आईटीओ पर बुधवार सुबह वायु गुणवत्ता सूचकांक 361 दर्ज किया गया। वहीं अक्षरधाम के आसपास एक्यूआई 360 दर्ज किया गया, जो बहुत खराब श्रेणी में है। वहीं इंडिया गेट के आसपास वायु गुणवत्ता सूचकांक 362 दर्ज किया गया। दिल्ली में दीपावली के दूसरे दिन लोग कर्तव्यपथ पर मॉर्निंग वॉक पर निकले। जहां एक स्थानीय निवासी शैलेंद्र रे ने साइकिलिंग के दौरान कहा कि दिवाली के बाद आमतौर पर हवा की गुणवत्ता खराब हो जाती है। दृश्यता कम होती है। लेकिन कुल मिलाकर स्थिति हर साल जैसी ही है। अभी सांस लेने में कोई समस्या नहीं है। चूंकि हम सुबह जल्दी निकलते हैं, इसलिए उस समय दृश्यता कम होती है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने एक इंटरव्यू के दौरान प्रदूषण को लेकर कहा कि विपक्ष दोषारोपण का खेल खेलेगा। उन्होंने 10 साल तक शासन

किया। राजधानी को बर्बाद और लूटा है। अब, जब दिल्ली उभर रही है, तो उनके पेट में दर्द होना स्वाभाविक है। रेखा गुप्ता की सरकार के सात महीनों में दिल्ली से 2.5 मिलियन मीट्रिक टन कचरा हटाया गया। आज दिल्ली भर में चलने वाली सभी बसों को इलेक्ट्रिक पब्लिक ट्रांसपोर्ट में बदल दिया गया है। लास्ट-माइल कनेक्टिविटी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सभी ऑटो अब ई-ऑटो हैं। आगे कहा कि डीपीसीसी के माध्यम से 500 से अधिक गज्जों के निर्माण स्थलों की निगरानी की जा रही है और सख्त अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है। निर्माण की निगरानी भी शुरू हो गई है। लगभग 15 हजार पुनर्स्थापित उद्योगों को नियमित किया गया। उनमें से 6 हजार को मानदंडों के तहत लाया गया। जिससे प्रदूषण समाप्त हो गया। बातचीत के दौरान आगे कहा कि यमुना नदी में बहने वाला सीवेज इसे प्रदूषित कर रहा था। उस पर बड़े पैमाने पर काम शुरू हो गया है। एसटीपी जो बिना निगरानी के चल रहे थे और यमुना में गंदा पानी छोड़ने की समस्या को फिर से सुलझा लिया गया है। कई विकेंद्रीकरण परियोजनाओं पर काम शुरू हो गया है। उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि यमुना इतनी जल्दी इतनी साफ हो जाएगी। उनका हम पर आरोप लगाना स्वाभाविक है, और यह उनकी हताशा का संकेत है। दिवाली के कारण बढ़ते प्रदूषण पर दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि यह पटाखों की वजह से नहीं है। आम आदमी पार्टी पूरी ताकत लगा रही है कि दिल्ली में प्रदूषण दिवाली की वजह से है। उनका पूरा ध्यान इसी पर है क्योंकि उन्हें एक खास वोट बैंक को खुश करना है। वे यह कहकर दिवाली पर प्रतिबंध लगाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं कि दीये जलाने और पटाखे फोड़ने से धुआं निकलता है। आगे कहा कि डीपीसीसी और सीपीसीबी के आंकड़ों के मुताबिक दिवाली से एक रात पहले एक्यूआई 345 था। यह पिछले कई साल के मुकाबले कम है। 2020 में यह 414 था, 2021 में यह 382 था। हमारे समय में यह 345 था। दीपावली पर पटाखे फोड़ने के बाद यह 356 हो गया। यानी 11 अंकों की बढ़ोतरी हुई है। पिछले साल पटाखों पर प्रतिबंध लगा था। दिवाली से एक दिन पहले एक्यूआई 328 था और दिवाली की अगली सुबह यह 360 था। इसमें 32 अंकों की बढ़ोतरी हुई थी।

नवंबर में होगी सिनेमा और कोरियन स्टडीज में पीएचडी के लिए परीक्षा, जेएनयू ने जारी किया

नई दिल्ली । जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय सिनेमा स्टडी सेंटर और कोरियन स्टडी सेंटर में पीएचडी में दाखिले के लिए कंप्यूटर आधारित परीक्षा आयोजित करेगा। यह फैसला विश्वविद्यालय की दाखिला शाखा ने किया है। इसके अनुसार शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए दोनों केंद्रों पर पीएचडी के लिए दाखिले सीबीटी के जरिये होंगे और वायवा भी होगा।

इस संबंध में विश्वविद्यालय ने एक नोटिस जारी किया है। जेएनयू में बाकी सभी केंद्रों पर पीएचडी में दाखिले की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। इस वर्ष पीएचडी में करीब 800 दाखिले हुए हैं। जबकि इन दो केंद्रों की 22 सीटों पर दाखिले बाकी थे। दरअसल, सिनेमा स्टडीज और कोरियन स्टडीज विषय यूजीसी की सूची में शामिल नहीं है। यूजीसी ने मार्च-2024 में सभी विश्वविद्यालयों के लिए यूजीसी नेट परीक्षा के जरिये पीएचडी दाखिला नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से आयोजित करना अनिवार्य किया था। दरअसल, सिनेमा स्टडीज और कोरियन स्टडीज विषय यूजीसी की सूची में शामिल नहीं हैं। यूजीसी ने मार्च 2024 में निर्देश दिया था कि पीएचडी दाखिले अब यूजीसी नेट परीक्षा के माध्यम से एनटीए द्वारा कराए जाएंगे। चूंकि ये विषय नेट में शामिल नहीं हैं, इसलिए जेएनयू ने स्वयं सीबीटी परीक्षा आयोजित करने का निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय जल्द ही परीक्षा की तिथि और आवेदन प्रक्रिया संबंधी सूचना जारी करेगा। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज (एसआईएस) में दोबारा स्कूल जनरल बॉडी मीटिंग (जीबीएम) कराने के आदेश जारी किए गए हैं। यह कदम जेएनयू छात्र संघ के संयुक्त सचिव वैभव मीणा की शिकायत के बाद उठाया गया। वैभव मीणा ने शिकायत निवारण प्रकोष्ठ को पत्र लिखकर कहा था कि एसएसएस, एसआईएस और स्कूल ऑफ लैंग्वेज में हुई जीबीएम में चुनाव समिति सदस्य का चयन नियमों के अनुरूप नहीं हुआ। जांच के बाद प्रकोष्ठ ने पाया कि एसएसएस और स्कूल ऑफ लैंग्वेज में प्रक्रिया सही रही, लेकिन एसआईएस में नियमों का पालन नहीं किया गया। इसके बाद एसआईएस में दोबारा जीबीएम बुलाने के आदेश दिए गए हैं। इस संबंध में मंगलवार को बैठक आयोजित की गई। छात्र संघ की उपाध्यक्ष मनीषा ने आरोप लगाया कि एबीवीपी और एनएसयूआई के कारण एसएसएस में जीबीएम अधूरी रह गई थी। स्कूलों के चुनाव समिति सदस्य अब मिलकर संयोजक का चयन करेंगे।

पुलिस कांस्टेबल के 7565 पदों लिए आवेदन का एक और मौका! इस तारीख तक बढ़ी पंजीकरण

नई दिल्ली दिल्ली पुलिस में कांस्टेबल (कार्यकारी) पुरुष और महिला परीक्षा 2025 के लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ा दी गई है। आयोग ने निर्णय लिया है कि ऑनलाइन आवेदन की नई अंतिम तिथि 31 अक्तूबर 2025 (रात 11 बजे तक) होगी। पहले उम्मीदवारों को 22 सितंबर 2025 से 21 अक्टूबर 2025 की अवधि में आवेदन करने के लिए आमंत्रित किया गया था। इस भर्ती के तहत से कुल 7,565 पदों पर कांस्टेबल पुरुष व महिला तथा पूर्व सैनिक श्रेणियों में भर्तियां होंगी। एसएससी कॉन्स्टेबल (एग्जीक्यूटिव) पदों के लिए आवेदन करने के लिए अभ्यर्थी का किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड या संस्था से 10+2 (इंटरमीडिएट) पास होना अनिवार्य है। विशेष पदों के लिए (बैंड्समैन, बुगलर, माउंटेड कांस्टेबल, ड्राइवर, डिस्पैच राइडर) और दिल्ली पुलिसकर्मियों के पुत्रों के लिए 11वीं पास भी मान्य है। इसके अलावा, मेल उम्मीदवार के पास पीई एवं एमटी के समय तक कार या मोटरसाइकिल चलाने का वैध ड्राइविंग लाइसेंस होना चाहिए। उम्र की दृष्टि से उम्मीदवार की न्यूनतम आयु 18 वर्ष और अधिकतम आयु 25 वर्ष होनी चाहिए। अर्थात, अभ्यर्थी का जन्म 2 जुलाई 2000 से पहले और 1 जुलाई 2007 के बाद नहीं होना चाहिए। आरक्षित वर्ग के उम्मीदवारों को नियमों के अनुसार ऊपरी आयु में छूट दी जाएगी। उम्र की गणना 1 जुलाई को ध्यान में रखकर की जाएगी। दिल्ली पुलिस कांस्टेबल (एग्जीक्यूटिव) भर्ती 2025 के लिए आवेदन शुल्क 100 रुपए रखा गया है। वहीं, SC, ST, महिला और PwD उम्मीदवारों को आवेदन फीस नहीं देनी होगी। आवेदन की पेमेंट BHIM UPI, नेट बैंकिंग, डेबिट या क्रेडिट कार्ड के माध्यम से की जा सकती है।सैलरी की बात करें तो यह पे लेवल-3 के तहत 21,700 रुपये से 69,100 रुपये निर्धारित है। इसके अलावा उम्मीदवारों को, और अन्य सुविधाएं भी मिलेंगी। अब अपना नाम, ईमेल, मोबाइल नंबर और आधार/पहचान विवरण दर्ज करें। ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भरें और व्यक्तिगत जानकारी, शैक्षणिक योग्यता, आयु, श्रेणी आदि सही-सही दर्ज करें। पासपोर्ट साइज फोटो, हस्ताक्षर, शैक्षिक प्रमाणपत्र और अन्य आवश्यक दस्तावेज अपलोड करें।

शिमला के धामी में जमकर बरसे पत्थर, खून से हुआ मां भद्रकाली का

शिमला । राजधानी से सटे शिमला ग्रामीण के हलोग धामी में दिवाली के दूसरे दिन होने वाले पत्थर के खेल की पौराणिक देव परंपरा के पत्थर के खेल का आयोजन किया गया। धामी में खेल का चौरा नामक स्थान पर घाटी के दोनों ओर से जमोगी और कटेडू टोलियों के बीच जमकर पत्थरों की बरसात हुई। इस बार करीब पौना घंटा तक लगातार दोनों टोलियों की ओर से पत्थर मारे गए। चार बजे से लेकर 4:40 तक हुए इस खेल में कटेडू टोली के सुभाष के हाथ में पत्थर लगा। उसके खून से परंपरा के अनुसार खेल का चौरा में स्थित मां भद्रकाली के मंदिर में तिलक कर पत्थर का खेल समपन्न हुआ। पत्थर लगने पर मौजूद सैकड़ों लोग ढोल नगाड़ों की थाप पर एक साथ थिरकते रहे। राजधानी शिमला से 35 किलोमीटर दूर धामी के खेल का चौरा में मंगलवार को पारंपरिक पत्थर का खेल करीब चार बजे शुरू हुआ । दरबार से करीब तीन बजे राज परिवार के उत्तराधिकारी जगदीप सिंह, पुजारी तनुज और राकेश शर्मा के पूजा अर्चना और पूजा के फूल लेकर ढोल नगाड़ों के साथ शोभा यात्रा खेल का चौरा के लिए निकली गई। शोभा यात्रा में पुष्पेंद्र सिंह, दुर्गेश सिंह, रणजीत सिंह, चेतराम, लेख राम, बाबु राम, प्रकाश, हेत राम , प्रकाश नील सहित अन्य लोग 3:40 बजे सती का शारड़ा स्मारक पर पहुंचे। मत्था टेकने के बाद झंडा लहराने के आयोजकों के इशारे के साथ ही घाटी के एक ओर एकत्र जमोगी, और दूसरी ओर कटेडू टोली के लोगों न पत्थर बरसाना शुरू कर दिया। पत्थर के इस खेल के दौराना बीच से गुजर रही सड़क से वाहनों की आवाजाही और, पैदल लोगों की आवाजाही रोक दी गई थी। करीब 4:40 पर कटेडू टोली की ओर से सुभाष के हाथ में पत्थर लगने पर खेल को आयोजकों ने रोकने का इशारा किया। समारक पर मत्था टेका गया, इसके बाद पहाड़ी पर बने

भद्रकाली के मंदिर में तिलक कर परंपरा को पूरा किया गया। इसके बाद सुभाष को प्राथमिक उपचार दिया गया। इस रोमांचक और अनौखी परंपरा को देखने के लिए हजारों की संख्या में लोग जुटे थे। जगदीप सिंह ने माता के मंदिर में पूजा अर्चना कर क्षेत्र की रक्षा और लोगों की सुख समृद्धि के लिए पूजा अर्चना की। जमोगी और कटेडू टोलियां इस खेल में आमने सामने होती है। जमोगी के खूंदों की ओर से जनिया, जमोगी, प्लानिया, कोठी, चईंयां, ओखरू गांव के लोग शामिल होते है। वहीं कटेडू राज परिवार की ओर से टोली में तुनडू, धगोई, बठमाणा और इसके आसपास के गांव के युवा शामिल होते हैं। राज परिवार के उत्तराधिकारी जगदीप सिंह ने बताया सदियों पूर्व राज परिवार की राज माता ने मानव बलि के विकल्प के रूप में इस खेल को शुरू किया था, जिससे क्षेत्र की जनता पर कोई संकट न आए। धामी रियासत में एक के बाद एक अनिष्ट को होने से रोकने और लोगों की सुख-समृद्धि के लिए नरबलि की प्रथा होती थी। राज माता ने इसे बंद करवाया और इसके स्थान पर पत्थर का खेल शुरू करवाया, जिससे किसी को अपनी जान न देनी पड़े और अनिष्ट न हो। इस विकल्प में खेल में चोट लगने पर निकलने वाले खून से भद्रकाली के खेल का चौरा में बने मंदिर में तिलक किया जाने लगा। तब से यह लगातार प्रथा चलती आ रही है। कोरोना काल में जगदीप सिंह ने अपने खून से भद्रकाली को तिलक कर इस प्रथा को टूटने नहीं दिया।

दिवाली के दूसरे दिन भी दिल्ली-एनसीआर की हवा में जहर, आसमान में धुंध

नई दिल्ली । दिवाली के दूसरे दिन आज दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण बरकरार है। हवा दमघोंटू बनी हुई है। हवा की गुणवत्ता बहुत खराब श्रेणी में है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़े जारी किए हैं। दिल्ली का औसत एक्यूआई 345-380 के बीच है। वहीं दूसरी तरफ ग्रेप-2 पूरी तरह से लागू है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली के आसके पुराम क्षेत्र में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 380 दर्ज किया गया, जो बहुत खराब श्रेणी के अंतर्गत आता है। दिवाली के बाद, पटाखों के धुएं और अन्य मौसमी कारकों के कारण धुंध और स्मॉग की स्थिति और गंभीर हो गई है। यह स्थिति न केवल दिल्ली बल्कि पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में चिंता का विषय बनी हुई है। दिल्ली के आईटीओ पर बुधवार सुबह वायु गुणवत्ता सूचकांक 361 दर्ज किया गया। वहीं अक्षरधाम के आसपास एक्यूआई 360 दर्ज किया गया, जो बहुत खराब श्रेणी में है। वहीं इंडिया गेट के आसपास वायु गुणवत्ता सूचकांक 362 दर्ज किया गया। दिल्ली में दीपावली के दूसरे दिन लोग कर्तव्यपथ पर मॉर्निंग वॉक पर निकले। जहां एक स्थानीय निवासी फ्रैंक दे ने समाचार एजेंसी आईएएनएस से बातचीत के दौरान कहा कि दिवाली के बाद आमतौर पर हवा की गुणवत्ता खराब हो जाती है। दृश्यता

कम होती है। लेकिन कुल मिलाकर स्थिति हर साल जैसी ही है। अभी सांस लेने में कोई समस्या नहीं है। चूंकि हम सुबह जल्दी निकलते हैं, इसलिए उस समय दृश्यता कम होती है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने एक इंटरव्यू के दौरान प्रदूषण को लेकर कहा कि सिर्फ दोषारोपण का खेल खेलेगा। उन्होंने 10 साल तक शासन किया। राजधानी को बर्बाद और लूटा है।

अब, जब दिल्ली उभर रही है, तो उनके पेट में दर्द होना स्वाभाविक है। रेखा गुप्ता की सरकार के सात महीनों में दिल्ली में 2.5 मिलियन मीट्रिक टन कचरा हटाया गया।

आज दिल्ली भर में चलने वाली सभी बसों को इलेक्ट्रिक पब्लिक ट्रांसपोर्ट में बदल दिया गया है। लास्ट-माइल कनेक्टिविटी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले सभी ऑटो अब ई-ऑटो हैं। आगे कहा कि डीपीसीसी के माध्यम से 500 से अधिक मकानों के निर्माण स्थलों की निगरानी की जा रही है और सख्त अनुपालन सुनिश्चित किया जा रहा है। निर्माण की निगरानी भी शुरू हो गई है। लगभग 15 हजार पुनर्स्थापित उद्योगों को नियमित किया गया। उनमें से 6 हजार को मानदंडों के तहत लाया गया। जिससे प्रदूषण समाप्त हो गया।

बातचीत के दौरान आगे कहा कि यमुना नदी में बहने वाला सीवेज इसे प्रदूषित कर रहा था। उस पर बड़े पैमाने पर काम शुरू हो गया है। एसटीपी जो बिना निगरानी के चल रहे थे और यमुना में गंदा पानी छोड़ने की समस्या को फिर से सुलझा लिया गया है। कई विकेंद्रीकरण परियोजनाओं पर काम शुरू हो गया है।

यमुना पर छठ की पूजा से प्रतिबंध हमारी सरकार ने हटाया, सीएम बोलीं- पिछली सरकार में लगे मुकदमे हटेंगे

दिल्ली। छठ पूजा को लेकर दिल्ली की मुख्यमंत्री ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर तैयारियों की जानकारी दी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि वर्षों से यमुना पर छठ की पूजा सरकार द्वारा बंद कर दी गई थी जिस प्रतिबंध को इस बार हमारी सरकार ने हटाया है। लगभग 17 घाट्स पर सरकार द्वारा मॉडल छठ घाट बनाए जा रहे हैं। दिल्ली में 1000 से अधिक छठ कार्यक्रमों के लिए आवेदन आ चुके हैं। इस सब में सारी व्यवस्थाएं सरकार की तरफ से दी जाएगी। हर जिले में कम से कम एक मॉडल छठ घाट जरूर बनाया जाएगा। इस वर्ष, शहर में छठ पूजा स्थलों की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में काफी बढ़ने की उम्मीद है। पिछले वर्ष, केवल 929 स्थानों पर छठ कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। लेकिन आज तक, हमें छठ पूजा मनाने के लिए समितियों से 1000 से ज्यादा आवेदन प्राप्त हुए हैं। यमुना नदी पर हमारे द्वारा बनाए जाने वाले 17 घाटों के अलावा, सरकार इन सभी 1000 घाटों, या समय सीमा तक जितने भी घाट बनेंगे, उनके लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं प्रदान करेगी। इसमें टेंट, बिजली, स्वच्छता और शौचालय शामिल हैं। प्रत्येक जिले और उप-जिले में कम से कम एक आदर्श छठ घाट बनाया जाएगा। भव्य स्वागत द्वार बनाए जाएंगे।

तेजस्वी का बड़ा एलान

जीविका दीदियों और संविदा कर्मियों को मिलेगा सरकारी कर्मी का दर्जा

पटना नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने बुधवार पोलो रोड स्थित अपने आवास पर प्रेस वार्ता की। आगामी चुनाव को देखते हुए उन्होंने दो बड़ी घोषणा की। तेजस्वी ने कहा कि बिहार के लोगों ने बदलाव का मन बना लिया है। लोग गरीबी, महंगाई, बेरोजगारी से परेशान हैं। हमलोगों ने जो संकल्प लिया था, जो घोषणाएं की, नीतीश सरकार ने उसकी भी नकल की। आज हमलोग बिहारवासियों के लिए दो बड़ी घोषणा करने जा रहे हैं। महागठबंधन की सरकार बनते ही इसे लागू करेंगे। तेजस्वी यादव जो कहता है, वह करता है। क्योंकि पिछले चुनाव के वक्त हमने जो बातें कहीं, उसे 17 महीने के कार्यकाल के दौरान पूरा कर दिया। तेजस्वी यादव ने जीविका दीदियों के लिए बड़ी घोषणा की है। कहा कि जीविका दीदियों का आज तक शोषण हुआ। उनके साथ अन्याय हुआ लेकिन

अब ऐसा नहीं होगा। हमारी सरकार बनते ही उन्हें सरकारी कर्मी का दर्जा दिया जाएगा। उनका शुरुआती वेतन 30 हजार रुपये होगा। उन्हें दो हजार रुपये प्रतिमाह अतिरिक्त कामों को लिए भत्ता दिया जाएगा। इतना ही नहीं उन्होंने जो ऋण लिए हैं, उसे भी ब्याज मुक्त कर दिया जाएगा। साथ ही उन्हें दो साल के लिए ब्याज मुक्त ऋण दिया जाएगा। इसके अलावा उनका पांच लाख तक का बीमा भी करवाया जाएगा। इसके अलावा तेजस्वी यादव ने संविदा कर्मियों के लिए भी बड़ी घोषणाएं की। कहा कि उर्मिला और केल्ट्रॉन के माध्यम से सरकार दो लाख से अधिक संविदाकर्मी से काम लेगी। उनके लिए हमारी घोषणा यह है कि बिहार में कार्यरत सभी संविदाकर्मियों को स्थायी किया जाएगा। अब उनका शोषण नहीं होगा। उन्हें मानसिक, शारीरिक और आर्थिक तनाव से मुक्ति दिलाने का काम किया जाएगा। ऐसा इसलिए होता है कि संविदाकर्मियों का सारा पैसा कमीशनखोरी में चला जाता है। सरकार इन संविदाकर्मियों का 18 फीसदी जीएसटी भी काटकर उन्हें वेतन देती है। इससे अच्छा उन्हें सरकारी नौकरी ही क्यों नहीं दे देती है। तेजस्वी यादव ने कहा कि हमलोग पहले ही माई-बहिन मान योजना की घोषणा कर चुके हैं। अब हमलोग मां योजना लाने जा रहे हैं। तेजस्वी ने MAA का मतलब समझाते हुए कहा कि एम का मतलब मकान, एक का मतलब अन्न, और ए का मतलब आमदनी। बिहार की हर माताओं और बहनों को यह तीनों चीजें उपलब्ध करवाई जाएंगी। सरकार बनते ही हमलोग इसे लागू करेंगे। बता दें कि बिहार में डेढ़ लाख से अधिक जीविका दीदी हैं। वहीं 12 से अधिक संविदाकर्मी अलग-अलग विभाग में तैनात हैं। पिछले कई साल से यह लोग राज्यकर्मी का दर्जा देने की मांग कर रहे हैं। तेजस्वी यादव ने कहा कि इससे पहले हमलोगों ने नियोजित शिक्षकों को स्थायी करने की बात कही थी। तो उस वक्त के डिप्टी सीएम दिवंगत सुशील मोदी ने कहा था कि ऐसा संभव नहीं है। लेकिन, हमलोगों ने संभव कर दिखाया। नियोजित शिक्षकों को सरकारी कर्मी का दर्जा दिया।

दिल्ली में भव्य छठ पूजा मनाने की तैयारी, पुष्प वर्षा से व्रतियों का होगा स्वागत, सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजन

नई दिल्ली । दिल्ली में मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने भव्य छठ पूजा की तैयारियों की घोषणा की है, जिसमें यमुना पर लगे प्रतिबंध को हटाकर 17 आदर्श घाटों का निर्माण और अन्य 1000 से अधिक घाटों पर टेंट, बिजली व स्वच्छता सहित सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। व्रतियों का पुष्प वर्षा से स्वागत और भोजपुरी-मैथिली सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, साथ ही 2021 में दर्ज हुई एफआईआर भी वापस ली जाएंगी। दिल्ली में इस साल छठ पूजा को लेकर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर त्योहार की तैयारियों को लेकर कई बड़े ऐलान किए। रेखा गुप्ता ने कहा कि वर्षों से, सरकार ने यमुना नदी पर छठ पूजा पर प्रतिबंध लगा रखा था। सरकार पूजा का आयोजन नहीं कर रही थी। इस बार, हमारी सरकार आने के बाद, हमने वह प्रतिबंध हटा दिया है और हम सभी व्यवस्थाएं प्रदान कर रहे हैं। यमुना नदी के किनारे 17 स्थानों पर सरकार द्वारा

आदर्श छठ घाटों का निर्माण किया जा रहा है। इस वर्ष, शहर में छठ पूजा स्थलों की संख्या पिछले वर्षों की तुलना में काफी बढ़ने की उम्मीद है। रेखा गुप्ता ने कहा कि पिछले वर्ष, केवल 929 स्थानों पर छठ कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। लेकिन आज तक, हमें छठ पूजा मनाने के लिए समितियों से 1000 से अधिक आवेदन प्राप्त हुए हैं। यमुना नदी पर हमारे द्वारा बनाए जाने वाले 17 घाटों के अलावा, सरकार इन सभी 1000 घाटों, या समय सीमा तक आने वाले किसी भी घाट के लिए सभी आवश्यक व्यवस्थाएं प्रदान करेगी। इसमें टेंट, बिजली, स्वच्छता और शौचालय शामिल हैं। प्रत्येक जिले और उप-जिले में कम से कम एक आदर्श छठ घाट बनाया जाएगा। छठ व्रतियों के लिए पूरी दिल्ली में भव्य स्वागत द्वार बनाए जाएंगे। उन पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया जाएगा। धार्मिक माहौल का ध्यान में रखते हुए भोजपुरी और मैथिली भाषाओं में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है कि हमारे श्रद्धालु स्वच्छ जल में खड़े होकर पूजा-अर्चना करें। सरकार यह सुनिश्चित करने के लिए काम कर रही है कि इस पर्व के सभी कार्यक्रम बिना किसी बाधा के संपन्न हों। आज से एक विशेष स्वच्छता अभियान शुरू हो रहा है, जिसमें हमारे सभी जनप्रतिनिधि - सांसद, विधायक और पार्षद, अपने-अपने क्षेत्रों में, जहाँ छठ पूजा होनी है, सभी घाटों पर जाकर विशेष सफाई अभियान चलाएंगे। गुप्ता ने आगे कहा कि 2021 में, सरकार ने सार्वजनिक अवज्ञा के लिए धारा 188 आईपीसी के तहत यमुना नदी पर छठ मनाने गए कुछ लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की। उस धारा को लागू करके उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई।

कुर्सी से तौलिया हटाएं, टेबल छोटा करें..., हरियाणा डीजीपी के अफसरों को कड़े निर्देश

पंचकूला । सूबे के नए डीजीपी ओपी सिंह ने बुधवार को प्रदेश के सभी आइजी, एसपी, डीएसपी और थाना प्रभारियों को संदेश जारी कर अपने ऑफिस में रखे टेबल को छोटा करने और कुर्सियों से तौलिया हटाने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि उनके ऑफिस में आने वाले लोगों के साथ बड़ी सहजता से पेश आना चाहिए।

सरकारी ऑफिस लोगों के पैसे से बना है। यह उनकी सहायता और समस्या के समाधान के लिए है। संदेश में डीजीपी ने यह भी कहा कि पुलिस विभाग एक बिजली के तार की तरह जिसमें करंट दौड़ता है। लोगों को आपसे कनेक्शन चाहिए, रोशनी चाहिए। करंट से झटका बेशक दें, मगर यह झटका उनके लिए होना चाहिए जो लोगों का खून चूसते हैं। उन्होंने कहा कि जिन अधिकारियों को पब्लिक डीलिंग की समझ नहीं है, उनको पुलिस थानों और चौकियों से हटाएं।

इसके लिए उन्होंने कहा कि बढ़ई से बढ़ई काम करवाना चाहिए। उसको हलवाई का काम नहीं देना चाहिए। डीजीपी ने लेटर में लिखा कि अगर ऑफिस में कोई कॉन्फ्रेंस हाल है तो विजिटर्स को वहीं बैठाएं। अगर नहीं है तो अपने ऑफिस के किसी एक कमरे को विजिटर्स रूम बनाएं। वहां प्रेमचंद, दिनकर और रेणु जैसे साहित्यकारों की किताबें रखें। एक व्यक्ति को नियुक्त करें जो उन्हें चाय-पानी पूछे और परोसे। एक व्यवहार-कुशल पुलिसकर्मी को नियुक्त करें जो उनसे उनके आने के उद्देश्य और समस्या के बारे में बात कर सके। डीजीपी ने लेटर में लिखा कि पुलिस थानों और अन्य अधिकारियों के कार्यालय में मैत्री प्रोटोकाल लागू किया जाना चाहिए। गेट से विजिटर्स रूम तक पहुंचने के लिए फुट स्टेप्स या अन्य निशान बनाए जाने चाहिए, ताकि लोगों को विजिटर्स रूम में जाने के लिए भटकना न पड़े। डीएवी पुलिस-पब्लिक स्कूल के इच्छुक छात्रों को विजिटर्स को गेट पर रिसीव करने और उन्हें विजिटर्स रूम तक पहुंचने के लिए मदद करने के काम में लगाएं। डीजीपी ने कहा कि पुलिस थानों, चौकियों और अन्य ऑफिसों में जब कोई व्यक्ति फरियाद लेकर आता है तो उसकी बात को बहुत ही ध्यान और धैर्य के साथ सुना जाए। इस दौरान अधिकारी अपने मोबाइल को खुद से दूर रखें और फरियादी पर पूरा ध्यान केंद्रित करें। इससे उसकी समस्या आसानी से समझ आएगी और उसका पुलिस पर विश्वास भी बढ़ेगा।

राष्ट्रपति की सुरक्षा में लापरवाही, कच्चे कंक्रीट हैलीपैड पर उतरा हेलीकॉप्टर, पहिए गड्ढे में धंसे

तिरुवनंतपुरम । राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की सुरक्षा में लापरवाही का मामला सामने आया है। दरअसल राष्ट्रपति को सबरीमाला यात्रा पर ले जा रहा वायु सेना का हेलीकॉप्टर बुधवार सुबह प्रमदम स्थित राजीव गांधी इंडोर स्टेडियम में नए कंक्रीट वाले हेलीपैड पर उतरते समय एक गड्ढे में फंस गया। राष्ट्रपति की सुरक्षा में चूक की यह घटना तब हुई, जब राष्ट्रपति मुर्मू के हेलीकॉप्टर की केरल के प्रमदम में लैंडिंग हुई। हेलीकॉप्टर से उतरने के बाद राष्ट्रपति का काफिला सड़क मार्ग से पंबा के लिए रवाना हो गया। राष्ट्रपति के रवाना होने के बाद कई पुलिसकर्मी और अग्निशमन बल के जवान राष्ट्रपति के हेलीकॉप्टर के पहियों को हैलीपैड पर बने गड्ढों से निकालते दिखाई दिए। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि आखिरी समय पर राष्ट्रपति के हेलीकॉप्टर को उतारने के लिए जगह तय की गई थी, जिसके चलते मंगलवार देर रात ही हेलीपैड बनाया गया। इसके चलते हेलीपैड सूख नहीं पाया और जैसे ही राष्ट्रपति का हेलीकॉप्टर लैंड हुआ तो भारी वजन के चलते वह हेलीपैड में ही धंस गया। गनीमत रही कि इस वजह से कोई गड़बड़ी नहीं हुई। अधिकारी ने बताया कि पहले राष्ट्रपति के हेलीकॉप्टर की लैंडिंग पंबा के पास निलक्कल में होनी थी, लेकिन खराब मौसम के कारण, राष्ट्रपति के हेलीकॉप्टर की लैंडिंग प्रमदम में हुई। अधिकारी ने बताया, कंक्रीट पूरी तरह से जम नहीं पाया था, इसलिए, जब हेलीकॉप्टर उतरा तो वह उसका भार नहीं झेल सका और जहां पहिए जमीन को छू रहे थे, वहां गड्ढे बन गए। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू दक्षिणी राज्य के चार दिवसीय आधिकारिक दौरे पर मंगलवार शाम तिरुवनंतपुरम पहुंचीं। बुधवार सुबह वे पथनमथिट्टा जिले के लिए रवाना हुए, जहां वे सबरीमाला मंदिर में दर्शन करेंगी।

नशा मुक्ति केंद्र में हत्या: हाथ-पैर और मुंह बांधा, कमरे में सोते रहे 12 लोग

मेरठ । अम्हेड़ा गांव स्थित सवेरा नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती फैमीद (42) की बुधवार रात पीटकर हत्या कर दी गई। परिजनों ने उसे चार दिन पहले ही नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती कराया था। फैमीद के हाथ-पैर और मुंह बांधते हुए सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। मृतक के भाई की ओर से गंगानगर थाने में नशा मुक्ति केंद्र संचालकों शिवलोक कालोनी निवासी सुशील और सैनी गांव के अरविंद समेत चार के खिलाफ हत्या की धारा में केस दर्ज कराया गया है। पुलिस ने दोनों संचालकों को गिरफ्तार कर लिया है। अन्य दो आरोपियों को तलाश किया जा रहा है। भावनपुर थाना क्षेत्र के जेई नंगला निवासी फैमीद फनीर मस्त्रई का काम करता था। उसकी पत्नी शाहीन की कैंसर से एक साल पहले मौत हो गई थी। इसके बाद वह नशे का आदी हो गया था। परिजनों ने बताया कि फैमीद को गंगानगर थाना क्षेत्र के अम्हेड़ा गांव स्थित सवेरा नशा मुक्ति केंद्र में 15 अक्तूबर को भर्ती कराया गया था। भाई अमर चौहान ने बताया कि नशा मुक्ति केंद्र की ओर से 20 अक्तूबर की सुबह करीब 5 बजे सूचना दी गई कि फैमीद की मौत हो गई है। परिजनों ने नशा मुक्ति केंद्र पर पहुंचकर हंगामा किया। सीओ सदर देहात

शिव प्रताप सिंह ने बताया कि सीसीटीवी फुटेज देखी जा रही है और अन्य तथ्य भी जुटाए जा रहे हैं। जल्द ही दो अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी की जाएगी। 19 अक्तूबर की रात करीब एक बजे सीसीटीवी फुटेज में बेड पर लेटे फैमीद के चार लोग हाथ-पैर बांधते दिख रहे हैं। इसके बाद उसके मुंह पर भी कपड़ा बांध रहे हैं। कुछ देर बाद फैमीद अचेत हो गया। बेहोशी की हालत में उसे अस्पताल पहुंचाया गया, जहां मृत घोषित कर दिया गया। सवेरा नशा मुक्ति केंद्र में जिस कमरे में यह घटना हुई, वहां पर रहने वाले 12 लोग सोते हुए दिख रहे हैं। इनमें से दाएं ओर साइड पर नीचे से तीसरे फैमीद लेटा हुआ दिख रहा है। उसके हाथ, पैर और मुंह बंधे थे। नशा मुक्ति केंद्र संचालक सुशील और उसके साथी अरविंद का कहना है कि रात में फैमीद बेकाबू हो गया था। इस कारण उसके हाथ-पैर बांध दिए और चेहरे पर कपड़ा ढक दिया। कुछ देर बाद उसे नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। वहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। मारपीट नहीं की गई। परिजनों ने बताया कि फैमीद की पत्नी शाहीन की एक साल पहले कैंसर से मौत हो चुकी है। उसकी चार बेटी और एक बेटा है। 15 अक्तूबर को ही उसे नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती कराया गया था।

अब पिता की मौत के बाद बच्चे अनाथ हो गए। गंगानगर थाना पुलिस ने फैमीद की हत्या के दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। जबकि भागे हुए दो आरोपियों को भी जल्द ही पकड़ लिया जाएगा।

पीएम मोदी ने अमित शाह को दी जन्मदिन की शुभकामनाएं, आंतरिक सुरक्षा में उनके योगदान को सराहा

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को उनके जन्मदिन पर बधाई दी। साथ ही देश की आंतरिक सुरक्षा को मजबूत बनाने में उनके योगदान की सराहना की। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि गृह मंत्री अमित शाह जी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। वे जनसेवा के प्रति अपनी निष्ठा और मेहनती स्वभाव के लिए व्यापक रूप से प्रशंसित हैं। पीएम मोदी ने लिखा कि भारत की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने और हर भारतीय को सुरक्षित व गरिमापूर्ण जीवन देने के लिए उन्होंने सराहनीय प्रयास किए हैं। उनके लंबे और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। बता दें कि अमित शाह को एक कुशल संगठनकर्ता और चुनावी रणनीतिकार माना जाता है। वे प्रधानमंत्री मोदी के सबसे करीबी सहयोगियों में गिने जाते हैं। मणिपुर के पूर्व मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को 61वें जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं और राज्य में शांति और एकता को बढ़ावा देने में उनके योगदान के लिए आभार जताया। एन बीरेन सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि माननीय केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह जी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। देश के प्रति आपकी अटूट निष्ठा करोड़ों लोगों को प्रेरित करती है। उन्होंने आगे कहा कि मणिपुर हमेशा आपके मजबूत समर्थन के लिए आभारी रहेगा, खासकर हमारे कठिन समय में आपने जिस तरह से विभिन्न समुदायों के बीच शांति और एकता को बढ़ावा दिया, वह सराहनीय है। भगवान आपको लंबा और स्वस्थ जीवन दें, ताकि आप देश का नेतृत्व इसी तरह साहस और बुद्धिमानी से करते रहें।

तमिलनाडु में भारी बारिश: कई जिलों में स्कूल और कॉलेज बंद, रद्द हुई उड़ानें; जलाशयों का जलस्तर बढ़ा

चेन्नई । चेन्नई और तमिलनाडु के अन्य हिस्सों में भारी बारिश ने हालात बिगाड़ दिया है। कई जगहों पर हुई भारी बारिश के चलते जनजीवन बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। तमिलनाडु में लगातार हो रही बारिश से जलाशयों का जलस्तर तेजी से बढ़ गया है। राजधानी चेन्नई में रातभर हुई तेज बारिश के कारण कई जगहों पर पेड़ गिरे हैं।

राज्य का सबसे बड़ा जलाशय मेट्टूर बांध अपनी पूर्ण जलभराव क्षमता तक पहुंच गया है। लगातार हो रही भारी बारिश को देखते हुए राज्य प्रशासन ने बुधवार को कई जिलों में स्कूलों और कॉलेजों की छुट्टी घोषित कर दी गई है। राज्य के तटीय जिलों में भी भारी वर्षा हुई है। इस बीच हवाई अड्डे के एक सूत्र ने बताया कि यात्रियों की अपर्याप्त संख्या के कारण चेन्नई-हैदराबाद उड़ान और कुआलालंपुर से चेन्नई जाने वाली मलेशियाई एयरलाइंस की उड़ान रद्द कर दी गई है। मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने भारी बारिश की चेतावनी

के मद्देनजर अधिकारियों के साथ बैठक की और उत्तर-पूर्वी मानसून की तैयारियों की समीक्षा की। उन्होंने सभी अधिकारियों को सतर्क रहने और राहत-बचाव कार्यों में लगे रहने के निर्देश दिए।

क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केंद्र के अनुसार, बंगाल की खाड़ी में बने कम दबाव के क्षेत्र ने अब स्पष्ट रूप ले लिया है। यह उत्तर तमिलनाडु, पुडुचेरी, कराईकाल और दक्षिण आंध्र प्रदेश तटों की ओर बढ़ रही है और अगले 24 घंटे में और मजबूत हो सकता है। मौसम विभाग ने बताया कि विलुपुरम, कडलोर, मयिलादुथुरै, नागपट्टिनम, तिरुवल्लूर, तंजावुर, पुदुकोट्टई व रामनाथपुरम जिलों में अत्यधिक भारी वर्षा की संभावना है। इन जिलों के साथ पुडुचेरी केंद्रशासित प्रदेश में भी रेड अलर्ट जारी किया गया है। वहीं, चेन्नई, कांचीपुरम, चेंगलपट्टू, तिरुनेलवेली, तूतीकोरिन, कल्लाकुरिची और कन्याकुमारी जिलों में 'ऑरेंज अलर्ट' घोषित किया गया है। सीएम ने वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए जिलाधिकारियों से बात कर राहत शिविर तैयार रखने के निर्देश दिए हैं। भारी बारिश के चलते सेलम जिले में मेट्टूर बांध (स्टैनली जलाशय) का जलस्तर 120 फीट तक पहुंच गया और बांध में 36,484 क्यूसेक (घन फीट प्रति सेकंड) पानी लगातार छोड़ा जा रहा है।

लखीमपुर खीरी में स्लीपर बस में लगी भीषण आग, यात्रियों ने खिड़कियों से कूदकर बचाई जान

लखीमपुर खीरी । लखीमपुर खीरी के मैगलगंज कस्बे में मुख्य चौराहे पर बुधवार सुबह उस वक्त अफरातफरी मच गई, जब डग्गामार स्लीपर बस में आग लग गई। देखते ही देखते पूरी बस आग का गोला बन गई। बस में करीब 100 यात्री सवार थे। स्थानीय लोगों की तत्परता से यात्रियों की जान बचाई जा सकी। कई यात्री खिड़कियों से कूद गए। जानकारी के अनुसार स्लीपर बस दिल्ली से सीतापुर जा रही थी। बस मैगलगंज चौराहे पर यात्रियों को उतारने और जलपान के लिए रुकी थी। इसी दौरान बस के पिछले हिस्से में धुआं उठता दिखा। कुछ ही पलों में लपटों ने पूरी बस को अपनी चपेट में ले लिया। यात्रियों ने खिड़कियों और दरवाजों से बाहर निकलकर जान बचाई, जबकि उनका सारा सामान जलकर राख हो गया। घटना में करीब 20 यात्री मामूली झुलस गए, जिन्हें स्थानीय लोगों की मदद से पास के निजी अस्पताल पहुंचाया गया। फिलहाल उनकी स्थिति खतरे से बाहर

बताई गई है। बस में आग लगने के कारणों का अभी तक स्पष्ट कारण सामने नहीं आया है। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि संभवतः शॉर्ट सर्किट की वजह से आग लगी होगी। घटना की सूचना मिलते ही मैगलगंज कोतवाल रविंद्र पांडे मौके पर पहुंचे और फायर ब्रिगेड को सूचित किया, लेकिन आग की सूचना के लगभग दो घंटे बाद दमकल विभाग की टीम घटनास्थल पर पहुंच सकी, तब तक बस पूरी तरह जल चुकी थी। स्थानीय लोगों ने फायर ब्रिगेड की देरी पर नाराजगी जताई है।

अकोला में दर्दनाक सड़क हादसा, अज्ञात वाहन के टक्कर से तीन की मौत और एक घायल

नई दिल्ली । महाराष्ट्र के अकोला जिले में एक अज्ञात वाहन के टक्कर से तीन लोगों की मौत हो गई और एक अन्य घायल हो गया। यह दुर्घटना मंगलवार रात करीब 10 बजे नेशनल हाइवे 53 पर कुरनखेड़ गांव के पास हुई। महाराष्ट्र के अकोला जिले में मंगलवार रात एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। नेशनल हाईवे नंबर-53 पर कुरनखेड़ गांव के पास एक अज्ञात वाहन ने सड़क किनारे खड़े चार लोगों को टक्कर मार दी, जिसमें तीन की मौके पर मौत हो गई और एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस के अनुसार, यह हादसा रात करीब 10 बजे हुआ जब एक दंपती, उनका ड्राइवर और एक अन्य व्यक्ति अपनी टैक्सी के खराब हो जाने के बाद हाईवे पर खड़े थे। वे वाहन को खींचने करने के लिए एक कार्गो वाहन बुला रहे थे, तभी मुर्तिजापुर से अकोला की ओर जा रही तेज रफ्तार गाड़ी ने उन्हें टक्कर मार दी।

पटाखों के शोर से धुएं में घुली दिवाली, अब दिल्ली में दमघोंटू माहौल से सांसों पर

दिल्ली । ग्रीन पटाखों पर मिली छूट से उत्साहित दिल्ली वालों ने अब अपनी सांसें सांसत में डाल दी हैं। सुप्रीम कोर्ट ने रात 8 बजे से रात 10 बजे तक हरित पटाखों को अनुमति दी थी लेकिन इसकी आड़ में जमकर अधिक प्रदूषण फैलाने वाले पटाखे भी छोड़े गए। इसकी वजह से मंगलवार को दिल्ली की सुबह दमघोंटू हो गई। सोमवार रात राजधानी में जमकर फोड़े गए पटाखों की वजह से पीएम2.5 (2.5 माइक्रोमीटर या उससे छोटे व्यास वाले सूक्ष्म कण) ने हवा को दमघोंटू बना दिया। कई इलाकों में धुंध की चादर छा गई और वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 351 दर्ज किया गया। यह हवा की बेहद खराब श्रेणी है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने मंगलवार रात तक एक्यूआई के गंभीर श्रेणी में पहुंचने की आशंका जताई है। 22 से 24 अक्तूबर तक वायु गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में रहेगी जिसकी वजह से सांस के मरीजों को दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। लोगों की आंखों में जलन जैसी समस्या भी हो सकती है। मंगलवार को अनुमानित अधिकतम मिश्रण गहराई 2700 मीटर रही। वेंटिलेशन इंडेक्स 4000 मीटर प्रति वर्ग सेकंड रहा। बवाना में 424 समेत कई इलाकों में एक्यूआई गंभीर और बेहद खराब श्रेणी में दर्ज किया गया। 20 अक्तूबर की रात 8 बजे दिल्ली में पीएम 2.5 का औसत स्तर 488 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज किया गया, जो सुरक्षित सीमा (60 माइक्रोग्राम) से करीब आठ गुना अधिक था। इसके बाद प्रदूषण तेजी से बढ़ा और रात के आखिरी घंटों में यह 675 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर तक पहुंच गया। 21 अक्तूबर सुबह 9 बजे तक स्तर घटकर 226 रहा। हवा की रफ्तार 1 मीटर प्रति सेकंड से भी कम रहने के कारण प्रदूषक फैल नहीं सके। दिवाली के बाद तापमान में आई गिरावट से स्थिति और खराब हो गई, जिससे प्रदूषक हवा में फंस गए। सीपीसीबी (2021-2025) के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि दिवाली 2025 के दौरान दिल्ली की हवा खतरनाक स्तर तक प्रदूषित हो गई थी। इस अवधि में पीएम 2.5 का औसत स्तर 488 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज किया गया। पिछले पांच वर्षों के आंकड़े दिखाते हैं कि दिवाली के समय प्रदूषण लगातार बढ़ा है – त्योहार की रात में पीएम 2.5 का स्तर आम तौर पर दोगुना या तिगुना हो जाता है और अगले दिन तक ऊंचा बना रहता है। सीएक्यूएम ने रविवार को दिल्ली-एनसीआर में ग्रैप के दूसरे चरण को लागू कर दिया था, लेकिन पटाखों की अनदेखी ने इन कोशिशों पर पानी फेर दिया। दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए कोयले और जलाऊ लकड़ी के साथ डीजल जनरेटर सेट के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। यह कदम दिखाता है कि पटाखों के उपयोग की अनुमति मिलने से पहले ही, हवा की गुणवत्ता इतनी खराब हो चुकी थी कि प्रशासन को कड़े आपातकालीन उपाय करने पड़े।

सुप्रीम कोर्ट ने 15 अक्तूबर को दिल्ली-एनसीआर में ग्रीन पटाखों की बिक्री और उपयोग की अनुमति दी थी। नियम के मुताबिक, पटाखे सुबह 6 से 7 बजे और रात 8 से 10 बजे तक फोड़े जा सकते थे। लेकिन, सड़कों पर देर रात तक पटाखों की गूंज सुनाई दी, जिसने हवा को और जहरीला कर दिया। दिवाली की रात आतिशबाजी से दिल्ली के आसमान का रंग-बिरंगा नजारा तो खूबसूरत था, लेकिन इसकी कीमत शहर की हवा को चुकानी पड़ी। दिल्ली के कुछ हिस्सों में पीएम 2.5 का स्तर तय मानक से 29 गुना ज्यादा हो गया।